रस का सिद्धान्त Contd.

Uma Pathak
Deptt. of SKT.
B.A. III (Content)

मम्मट का मत -

रस क्या है? विभाव - अनुभाव - संचारीभाव किसे कहते हैं? इस विषय में आचार्य मम्मट का कथन है -

'कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ॥
विभावा अनुभावाश्च कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः॥

अर्थात् "लोक में रति आदि (प्रेम आदि) स्थायी भाव की उत्पत्ति के जो कारण हैं - कार्य और सहकारी कारण होते हैं, वे ही यदि नाट्य और काव्य में आ जाएं तो क्रमशः विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव या संचारीभाव कहलाते हैं। इन विभाव आदि भावों की सहायता से अभिव्यक्त होनेवाले स्थायीभाव (रति आदि) ही रस कहे जाते हैं।"

काव्यप्रदीपिकाकार इन्हीं कारिकाओं की व्याख्या करते हुए बतलाते हैं - 'रति' आदि शब्द से हास, उत्साह आदि अन्य स्थायी भाव भी समझ लेना चाहिए। इन स्थायीभावों के लोक में जो कारण नायक, प्रतिनायक आदि हैं, ये उद्दीपन रूप हैं और इनके चेष्टा रूप कार्य प्रतिपक्ष के सम्मुख 'प्रयाण' आदि हैं तथा सहकारी के अन्तर्गत 'सहायक रूप - कारण' धैर्य, गर्वादि आदि आते हैं, ये ही यदि काव्य या नाटक में निबद्ध किए जाने पर क्रमशः विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव कहलाते हैं। इन विभावादि से व्यक्त अर्थात् स्फुट होकर या लोकोत्तर बोध का विषय होकर



Scanned with CamScanner

'स्थायी भाव' ही 'रस' कहा जाता है।

रसभेदाः -

'श्रृंगारहास्य करुणारौद्रवीरभयानकाः।
बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ काव्ये रसाः स्मृताः॥'

(मम्मट)
मम्मट ने रस के आठ भेदों की चर्चा की है। श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक बीभत्स और अद्भुत ये काव्य के आठ रस हैं।

① श्रृंगार का उदाहरण -

विवृण्वती शैलसुताऽपि भावमङ्गैः स्फुरद्बालकदम्बकल्पैः।
साचीकृता चारुतरेण तस्थौ मुखेन पर्यस्तविलोचनेन॥
(कुमारसंभवम्)

यह कालिदासकृत महाकाव्य कुमारसंभव से उद्धृत श्लोक है। शंकर आलम्बन विभाव है, पूर्ववर्णित बसन्त-शोभा उद्दीपन विभाव है, रोमाञ्चादि अनुभाव और लज्जादि व्यभिचारी भाव हैं। इन सबके द्वारा स्थायीभाव 'रति' ही संपुष्ट होकर श्रृंगार रस के रूप में आस्वाद्य होती है।

② हास्य रस का उदाहरण -

भिक्षो! मांसनिषेवणं प्रकुरुषे? किं तेन मद्यं विना?
मद्यञ्चापि तव प्रियम्? प्रियमहो! वाराङ्गनाभिः सह।
तासामर्थरुचिः कुतस्तव धनम्? द्यूतेन चौर्येण वा,
चौर्यद्यूतपरिग्रहोऽपि भवतः? नष्टस्य कान्या गतिः॥
(काऽन्या)

Contd.

Scanned with CamScanner